जापान भारती

अंक ४ विक्रम संवत् २०५२ जून १९९५

इस अंक में

हमारा पन्ना

आपका पन्ना

काव्य धारा

आजकल

परिचय

अनुभव

संस्कृति

बचपन

निवेदन

रम्य रचना

रान्ना

कविता

संपादक

सौरभ सिंघल

संपादक मंडल

अखिल मित्तल

रन्जन गुप्त (रंजन गुप्त)

रंजन कुमार

सुशील कुमार जैन

पता

२०८, मैंशन न्यू ताकानावा

२-१०-१५ ताकानावा

मिनातो कू

तोक्यो १०८

फोन/फैक्स/ई-मेल

सौरभ : ०३-३४६२-०८५३

singals@ml.com

रंजन कुमार : ०३-३४७३-६०४३

ranjan@twics.com

सुशील : ०३-३८३२-१६४१

सांस्कृतिक विकास में भाषा का विशेष महत्व है । चित्रकला, संगीत, रंगमंच, साहित्य, और नृत्य के मोतियों को माला में पिरोने वाला सूत्र भाषा ही होती है। आप्रवासी भारतीयों द्वारा जहाँ भी मातृभाषा के प्रयोग में कमी आई, उनका संपर्क अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने मूलस्थान से उतना ही क्षीण होता चला गया । और वे विदेशी ताना-बाना ओढ़ वहीं के रंग में ढल गए । इसके विपरीत, जिन देशों में मातृभाषा को निष्ठापूर्वक सेवा की गई, वहाँ बसे आप्रवासी भारतीयों तथा उनकी पीढ़ियों की विचारधारा में गहरा परिवर्तन नहीं आया - लंदन में भारतीय घरों से रैप सुनाई देता है ; ओटावा के घरों में शंखनाद आज भी गूँजता है।

भाषा का चिंतन से एक सीधा, स्पष्ट संबंध है। एक नवजात शिशु की सोचने की शक्ति केवल उत्तेजनाओं तक ही सीमित होती है - कुछ मास के बाद उसकी कल्पना में बिंब-प्रतिबिंब भी सम्मिलित हो जाते हैं । जैसे-जैसे अनुभव में वृद्धि होती है, शब्दावली बढ़ती है और चिन्तन का विकास होता है ।

जॉर्ज ऑरवेल के प्रसिद्ध उपन्यास '1984' में पुलिस-राज्य हर वर्ष शब्दकोष में से कुछ और ऐसे शब्दों को हटा देता है जिनसे किसी सशक्त राय को व्यक्त किया जा सके । यहाँ तक कि 'हानिकारक' के स्थान पर 'कम लाभदायक' का प्रयोग होने लगता है । परिणामस्वरूप जनता में स्वतंत्र चिंतन-मनन की शक्ति ही नहीं, अपितु इच्छा भी समाप्त हो जाती है । अफ्रीका की कुछ भाषाओं में 'एक', 'दो' के आगे 'तीन', 'चार' की अपेक्षा आता है 'अनेक' । तीन भैंसें भी अनेक हैं और तीन सौ भी । हम-आप शायद हिम, बर्फ, और ओले की श्रेणियों में ही जमे हुए पानी का वर्गीकरण कर पाएँ, किन्तु एस्कीमो भाषाओं में २२ प्रकार के शब्द अलग-अलग प्रकार के हिम का वर्णन करते हैं; हमारे लिए ऐसी कल्पना भी कठिन है - अर्थात् अनुभव, चिंतन, और भाषा एक दूसरे से जुड़े हैं और इनका विकास पारस्परिक रूप से ही संभव है।

अपने प्राचीन ग्रंथों का सार विदेशी भाषाओं के माध्यम से प्राप्त करना शायद सम्भव तो है, पर अनुवाद में इनका मर्म धूमिल हो जाता है । यह भी नकारा नहीं जा सकता कि हर प्रदेश और संस्कृति की नैसर्गिक, आंचलिक विशेषताओं का वर्णन किसी विदेशी भाषा में पूर्ण रूप से नहीं किया जा सकता । पपीहे की कूक, सावन की काली घटा, माँ का आँचल और माँग का सिन्दूर - यह भाव आप अपनी भाषा में ही समझ - समझा सकते हैं ।

हम एक बार फिर दोहराना चाहेंगे कि अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए अपनी मातृभाषा का प्रयोग नितांत आवश्यक है - मातृभाषाओं में लिखें, बोलें, इन्हें सीखें, और सिखाएं । इन्हें वह सम्मान दें जो इनका अधिकार है, इनके प्रयोग में गौरवान्वित हों ।

जापान भारती के तीसरे अंक पर हमें अनेक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं । इससे हमारा उत्साह तो बढ़ा ही है, साथ-साथ आप्रवासी भारतीयों को अपनी मातृभाषा और जन्मभूमि से जोड़ने का हमारा प्रयास भी सार्थक सिद्ध हुआ है ।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार हिमांशु जोशी द्वारा हिंदी के विकास के लिए किया गया आजीवन संघर्ष किसी तप से कम नहीं है, और कई अर्थों में हमारी प्रेरणा भी है । जोशी जी का आशीर्वाद-पत्र पा कर हम धन्य हुए।

आपसे अनुरोध है कि अपना समर्थन पत्र-प्रतिक्रियाएँ भेजने तक ही सीमित न रखें - अधिकाधिक रचनाएँ भेज कर जापान भारती के पृष्ठों पर एक सतरंगी आभा बिखेरें ।

- सौरभ सिंघल

प्रिय सौरभ जी,

सादर नमस्कार । मुखट आश्चर्य के साथ भारती का प्रवेशांक एवं अन्य अंक प्राप्त हुए । इस महान कार्य की शुरुआत के लिए आपको एवं अन्य साथियों को हार्दिक बधाई । जापान में आए मुझे लगभग पाँच वर्ष हुए और भारती प्राप्त होने पर मुझे पहली बार यह अनुभूति हुई कि यह पाँच साल मैं ने ऐसे व्यतीत किए जैसे कि अपनी मातृभाषा से कोई संपर्क ही न हो । परंतु अब भारती के माध्यम से अपनी भाषा एवं देश-विदेश में रह रहे भारतीयों से जुड़े रहने की आशा करता हूँ । इस पत्रिका की सफलता एवं प्रगति की कामना करता हूँ ।

- *संजय पांपली*

आदरणीय अखिल जी,

जापान भारती भेजने के लिए धन्यवाद । मैं हिंदी पढ़ने - लिखने में बहुत रुचि रखती हूँ पर इसके लिए अवसर अधिक प्राप्त नहीं होते । शब्दकोष की सहायता से मैंने जापान भारती का तीसरा अंक पढ़ा । आशा करती हूँ कि आप मुझे यह पत्रिका लगातार भेजते रहेंगे । डाक खर्च के लिए २००० येन भेज रही हूँ।

- *अकिको नरिता,*
टोक्यो

आपके सहयोग के लिए हम बहुत आभारी हैं - संपादक

संपादक जी,

नमस्कार,

टोक्यो में भारतीय भाषाओं की पत्रिका का प्रयास अत्याधिक प्रशंसनीय है । शुभ कामनाओं सहित,

- *सुनील जैन,* ताइतो-कू, टोक्यो

आपका पत्र एवं जापान भारती का तीसरा अंक प्राप्त हुआ । पहले दोनों अंक भी मुझे मिले हैं । आपने ऐसा शुभ कदम उठाया है, इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका यह उत्साहजनक प्रयास अवश्य ही सफल रहेगा। प्रत्येक अंक का बेसब्री से इंतज़ार है । शुभकामनाओं सहित,

- *प्रदीप कुमार सिन्हा*, कावासाकी

जापान भारती का तीसरा अंक हमारे हाथ में है । दूसरे अंक से हम पाठकों को हमारा पत्र भी मिला है, इसकी मुझे बेहद खुशी है । जापान भारती के जरिये हम आम पाठकों तक ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक रचनायें पहुँचाने के लिए धन्यवाद।

पहले अंक में प्रो. हरजेन्द्र चौधरी की रचना 'आंखों देखी' (सच्ची घटना) काफी रोचक लगी । दूसरे अंक में 'संस्कार' : भारतीय परम्परा का आधुनिक आकलन भी काफी अच्छा है । इस आकलन ने उपन्यास संस्कार को समझना और भी सरल बना दिया है । जापान भारती के अगले अंक का बेसब्री से इंतजार है । शुभकामनाओं सहित,

- *प्रीति सिन्हा,* कावासाकी

प्रिय श्री सिंघल,

जापान भारती के अंक प्राप्त हुए । धन्यवाद ! प्रयास सचमुच प्रशंसनीय है । किसी विशिष्ट सहयोग की अपेक्षा हो तो अवश्य लिखें । आपका,

- *शांतनु भागवत*, द्वितीय सचिव,
भारतीय राजदूतावास, टोक्यो

श्रीमान संपादक महोदय एवं संपादक मंडल के महानुभावगण,

सादर नमस्कार,

आप सभी का यह सराहनीय प्रयास लगातार निखार पर है। कृपया अपने पूर्ण उत्साह और शक्ति से भारतीय समुदाय को जड़ों को सींचते रहें और सांस्कृतिक प्रसाद बाँटते रहें । माँ भारती की सेवा का आप सभी का यह प्रयास सदैव फलता-फूलता रहे इसी आशा और शुभकामनाओं के साथ आपका ही,

नरेश मुकुट सिंह, योकोहामा

प्रिय श्री सारभ सिंघल,

जापान भारती के तीनों अंक पढ़े और मातृभाषा का आनंद लिया । ये अंक पढ़ कर विदेश में रह कर भी

प्रिय सिंघल जी,

आपका पत्र मिला । इससे पूर्व 'जापान भारती' के तीनों अंक भी । धन्यवाद ।

आप्रवासी भारतीयों की अपनी समस्याएँ हैं । अपने देश से जितना दूर जाते हैं, भावात्मक रूप से उतना ही, अपने देश की मिट्टी से जुड़ते चले जाते हैं । और धीरे-धीरे अंत में विदेश की धरती पर मात्र भारतीय न रह कर सम्पूर्ण भारतीयता के संवाहक बन जाते हैं ।

आप लोगों का प्रयास सराहनीय है । भारत में भले ही अभी तक हिन्दी को वह प्रतिष्ठा नहीं मिल पाई जो इसका अधिकार है, परन्तु विदेशों में आप इसे जिस तरह से गौरवान्वित कर रहे हैं, उसकी सराहना किन शब्दों में करूँ ।

आपको तथा आपके सहयोगियों को मेरी हार्दिक मंगलकामनाएँ । अपने प्रयत्नों में आप को पूरी-पूरी सफलता मिले । हाँ, कभी समय मिले तो प्रयास कीजिए कि भारतीय वाङ्मय का जापानी में थोड़ा बहुत अनुवाद हो। इससे जापान के प्रबुद्ध पाठकों को समृद्ध भारतीय साहित्य की बानगी मिलेगी ।

शीघ्र ही कोई रचना भेजूँगा । मिवाको की रचनाएँ रोचक रहती हैं । जापान में हिंदी की गतिविधियों के विषय में भी पत्रिका के माध्यम से अवगत कराते रहें ।

शेष फिर,
सस्नेह, हिमांशु जोशी